International Journal of Hindi Research
ISSN: 2455-2232
Impact Factor: RJIF 5.22
www.hindijournal.com
Volume 3; Issue 6; November 2017; Page No. 32-34

श्री राम के पथ प्रदर्शक महर्षि अगस्त

वरूण मिश्र
शोध छात्र (हिन्दी), महात्मा गाँधी चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालय, चित्रकूट, सतना, मध्य प्रदेश, भारत।

सारांश
''रामायण'' का शब्दार्थ है ''राम का आयण'' अर्थात श्री राम का भ्रमण, श्री राम भ्रमण अर्थात बनवास सउद्देश्य था। श्रीराम का बन गमन जन मंगल हेतु तथा भारत को रक्ष संसकृति से मुक्त करना था।
श्री राम से पहले महर्षि, मुनि, ऋषि आदि भी इस कार्य में लगे थे। इन ऋषियों ने दण्डकारण्य में जगह–जगह आश्रम स्थापित कर रक्खे थे जो ऊर्जा के केन्द्र तथा साधारण जन को प्रेम रज्जू में बांध पठन पाठन तथा शस्त्र विद्या की दीक्षा देते थे। इसीलिये रावण ऋषि मुनियों के आश्रमों से कुपित था, तथा अपने सैनिकों को आज्ञा दे रक्खी थी कि आश्रमों को उजाड़ो एवं उन्हें तंग करो।

मूल शब्द: श्रीराम, महर्षि अगस्त, चित्रकूट, सूपनखा, परशुराम

प्रस्तावना
दण्ड कारण्य अत्रि मुनि के आश्रम (चित्रकूट) से प्रारम्भ होकर विन्ध्य पर्वत की तलहटी, नर्वदा, ताप्ती, बेतवा, केन, बागे सोन, गोदावरी, महानदी जैसी सीमओां से सेबित, तथा दुरूहबनो से अच्छादित पर्वतीय बन प्रान्त था, यह मय दानव के राज्य का क्षेत्र था जिसने रावण को मन्दोदरी के व्याह में दहेज के रूप में दे दिया था। एक तरफ यह ऋषियें की तपोस्थली थी तो दूसरी तरफ राक्षसों का क्रीडा केन्द्र। यह क्षेत्र रावण की वहन सूपनाखा और भाई खर दूषण की केलि स्थली थी। विलासपुर नगर का खरौद नामक स्थान खर दूषण की राजधानी थी। रावण का साला मायावी भी यहां रहता था जिसे बालि ने मार डाला था।

''माया सुत मायावी तेहि नाऊं''

इस दण्ड कारण में रावण का राज्य था, महिष्मति से सहस्त्रार्जुन का राज्य था, किष्किन्धापुरी में बालि का राज्य था, वाणासुर का राज्य भी दक्षिण में था, सभी रावण से अधिक बलशाली थे, इन्होंने रावण को पराजित किया था, रावण महत्वाकांक्षी था अतः उसने बालि से सन्धि कर ली, सहस्त्रार्जुन को परशुराम ने मार डाला।
दक्षिणापथ अगम तथा अउल्लघनीय था। विन्ध्याचल को पर्वत श्रेणी एवं बडी–बडी नदियों के जाल तथा हिंसक पशुओं ने दक्षिण को उत्तर से अलग कर दिया था। उत्तर के श्रेष्ठ शासक दशरथ जी थे वे भी रावण से डरते थे। जब विश्वामित्र राम लक्ष्मण को आश्रम रक्षा हेतु लेने आये तब दशरथ जी कहते हैं–
''सेतु वार्यवन्ता की भादन्ते युधि रावता, तेन चाह न शक्तोदस्मि सयोद्धतस्य काले सवलो व मुनि श्रेष्ठ सहितो व ममात्मजै''
''हे मुनि श्रेष्ठ रावण युद्ध क्षेत्र में बलवानो का बल अपहरण कर लेता है अतः मै अपनी सेना और पुत्रों के साथ रह कर भी उसके सैनिकों से युद्ध करने में असमर्थ हूँ।''

''देव दानव गन्धवां यक्षा पतंगपन्नगां।
न शक्ता रावण सोढं कि मुन र्भानवा युधि

''युद्ध में रावण का वेग तो देवता, दानव, गन्धर्व, यज्ञ, गरूण और नांग भी नहीं सह सकते, फिर मनुष्यों की बात ही क्या''?
उत्तर में कौशल राज्य के राजा दशरथ थे मिथला में (बिहार, बंगाल, नैपाल) राजा जनक का राज्य था, गंगा किनारे राजा निषाद का राज्य था जो सभी रावण से लड़ने में असमर्थ थे, दक्षिण में बानर तथा ऋीक्ष जन जातियां प्रबल थी इनका अपना संघ था जिसका प्रमुख बाली था, पर इनमें सैन्य व्यवस्था न थी। रावण ने बालि से सन्धि कर रक्खी थी।
त्रेताकाल में पूरे आर्यावर्त में प्रकाशपुंज ऋषि मुनि थे। ये सन्यासी दो प्रकार के थे एक तो शान्ति पूर्वक आत्मा परमात्मा के चिन्तन में व्यस्त रहते थे, दूसरे शिष्यों को आध्यात्म विद्या तो प्रदान करते ही थे, उन्हें शस्त्र विद्या भी सिखते तथा वैज्ञानिक आविष्कार भी करते रहते थे ऋषि भरद्वाज, विस्वामित्र, अगस्त, परुशराम आदि ऐसे ही ऋषि थे।
अगस्त ऋषि का एक नाम कुभज भी है, इनका जन्म कुंभ से हुआ था वर्तमान काल में बच्चों का जनम परखनली से हो सकता है तो कुंभ से क्यों नही ? अगस्त उनका प्रारम्भिक नाम नहीं ''आग'' अर्थात विन्ध्यान्चल को ''सत्यंम'' करने के कारण उनका नाम अगस्त पड़ा। यह एक विशेषण है जो संज्ञा बन गया। उत्तर और दक्षिण में भारत बटा था दोनो में शत्रुता थी दोनो की शत्रुता दूर करने को प्रथम बार अगस्त जी दक्षिण गये। अगस्त जी ने दक्षिण की भाषा तमिल सीखी, व्याकरण लिखा, मेल जोल बढ़ाया और वहीं बस गये। जनो को संगठित किया और राक्षसों के विरूद्ध हथियार उठाये उनका संहार किया फलस्वरूप दैत्य उनसे डरने लगे पर वे पूरी तरफ से सफल नहीं हुए अन्तः जब राम जी ने रहने का स्थान पूंछा, तो उन्होंने राक्षसों के गढ पंचवटी में रहने का आग्रह किया, क्योंकि वे श्री राम के सामर्थ को वे जानते थे।

''हे प्रभु परम मनोहर ठाऊं, पावन पंचवटी तेहि नाऊं
दंडक बन पुनीत प्रभु करहूं, उग्र साप मुनिवर कर हरहूं
वास काहू तह रघुकुल रायो, कीजै सफल मुनिन्ह दर दाया''

प्रारम्भ में सिद्धाश्रम (विश्वामित्र की तपोस्थली, गंगा किनारे बक्सर के पास बिहार) कुंभज ऋषि की तपोस्थली थी। अगस्त शस्त्रधारी ऋषि थे तपस्या में अवरोध खड़ा करने के कारण उन्होंने ताड़का

पति सुन्द को मार डाला फलस्वरूप उसकी पत्नी ताडका और उसके पुत्र मारीच सुवाह भयानक आंतक मचाने लगे। ताड़का चूंकि स्त्री थी अतः अवध्य होने के कारण उन्होंने सिद्धाश्रम छोड़ दिया और काशी चले गये बाद में ऋषि विश्वामित्र की आज्ञा से श्री राम ने ताड़का का बध सिद्धाश्रम में किया।

शैव मत दक्षिणा में पहले से था अतः अगस्त जी अपने गुरू शिव जो का आज्ञा मान राक्षसों के प्रतिरोध हेतु एंव उत्तर दक्षिण को एक करने हेतु दक्षिण गये। विन्ध्य विजय से कुंभज ''अगस्त'' हुए ''अंग पर्वत स्तम्भयति इति अगस्त'' दक्षिण का रास्ता प्रथम बार विन्ध्याचल, भयंकर जंगल, पठारी कटीले जंगल के मध्य 12 शिष्यों को साथ लेकर बनाया। दक्षिणा में पौदिय मल्ले (मलय पर्वत) की पहाड़ी पर अपना आश्रम स्थापित किया। विन्ध्य पर्वत अकड़ कर खड़ा था जिसे कोई पार न कर सकता था और भारत को दो भागों में बाटे था, वह तेजस्वी मुनि के आगे बौना हो गया।

अगस्त जी दरदर्शी प्रति उत्पन्न बुद्धि के ऋषि थे अतः उन्होंने शिष्यों सहित रास्ता साफ कर दण्डकारण्य में रमरारिक स्थानो पर ऋषि आश्रम स्थापित किये। दण्डकारण्य के प्रवेश पर अति आश्रम, मध्य प्रदेश में घुस कर आरमंभ और सुतीक्षरा आश्रम फिर अग्निजिहवा आश्रम (अगस्त जी के छोटे भाई) सोन महानदी के संगम पर मार्कन्देय आश्रम फिर अगस्त आश्रम, मंदाग्नि आश्रम केशी आश्रम, ऋंगी ऋषि का आश्रम, शवरी आश्रम, मतंग ऋषि का आश्रम, लोमस आश्रम। श्री राम बनवसि काल में इन आश्रमों मे गये और ऊर्जा प्राप्त की।

बाद में अगस्त जी ने स्वयं गोदावरी नदी के ऊपर बन काट कर आश्रम बनाया, समुद्री डाक कालकेय राक्षस को नष्ट किया, सम्भवत, इसको मारने हेतु जलयोत बनवाये और समुद्र के ये राक्षस जो अभय थे उन्हें समाप्त किया अतः अगस्त जी समुद्र पी गये कथा प्रचलित हुई।

इसी तरह इल्वल आदि राक्षस पेट में घुस जाते थे (आर्यो की सेना मे) आर्यों को नष्ट करते फिर निकल आते थे। छाये इनसे परेशान थे, अगस्त ने तथ्यों का पता लगाया, आपस में लड़ाने की प्रक्रिया बीच में घुस कर उत्पात मचाने की कला को जान कर इनको समाप्त किया।

अगस्त जी प्रथम ऋषि थे जो दक्षिण गये और उत्तर का मैत्री सन्देश दिया, श्री राम ने वही रास्ता चुना जिसे अगस्त जी ने बनाया तथा खोजा था। यह पथ आश्रमों, ग्रामों तथा समतल मैदानो से जाता था, बांदा, सतना, पन्ना, शहडोल, उमरिया, सरगुजा आदि जिलों से होता हुआ छत्तीसगढ प्रान्त के रामगढ़ जनपदों से गोदावरी नदी की और पंचवटी श्री राम पहुंचे और वहां से दक्षिण में स्थित लंकापुरी गये।

कम्ब रामायण, रंगनाथ, कृतिवास, वाल्मीक रामाभणों एवं तुलसी कृत मानस एवं लोकोन्तियों मे कहीं श्री राम द्वारा नर्मदा पार करने का वर्णन नहीं है 10. 1/2 वर्ष श्री राम ने दण्डकारण्य में विताये। पंचबटी से आगे बढने पर जटायू न रावण द्वारा सीता को दक्षिण की ओर ले जाने की सचूना दी शबरी ने भी सुग्रीव से मिलता करने का अनुरोध किया जो किष्किन्धा से निर्वाति था, किष्किना द0 पूर्वी घाट के निकट है, इसी नगरी के निकट ऋष्यमूक गिरी श्रंग पर श्री राम ने एक चौमासा व्यतीत किया। यहां का राजा वाली था जिसे मार कर श्री राम ने सुग्रीव को राजा बनाया और सैन्य सहायता प्राप्त की ऋषि मुनियों के कई आश्रम होते थे जिनमें जा–जा कर जान रश्मि विखेरते थे श्री राम और अगस्त ऐतिहासिक व्यक्ति है अगस्त जी ने विश्वामित्र की तरह (आध्यात्म रामायण के अनुसार) श्री राम को कभी खाली न होने वाले दो तरकस, धनुष वाण, सोने की म्यान तथा स्वर्ण की मूठ वाली तलवार रावण को मारने हेतु अर्पित किये और कहा कि विष्णु ने इसी धनुष से राक्षसों को मारा था आय भी भरिये।

तुलसी कृत ''मानस में अगस्त आश्रम का विवरण दो स्थानो पर मिलता है। पहला सुतीक्षण आश्रम से दक्षिण 5 योजन पर दूसरे विवरण के अनुसार दक्षिण दिशा में (विन्ध पर्वत के) उनके आश्रम का उल्लेख लंका के पास कुंजर पर्वत के पास माना गया है।

''बाल्मीक रामायण'' के अनुसार दो गोदावरी नदियों का उल्लेख है श्री राम की दक्षिण यात्रा से दक्षिण में आर्य सभ्यता के विकास में तीव्रता आई इसमें जन जातियों निषाद, बानर, ऋक्ष आदि ने बडी सहायता की रावण का प्रभाव अमर कन्टक तक पहुंच गया था ''अमर कन्टक'' का अर्थ'' सुरो का करक'' है।

श्री राम ने दो कार्य किये–1 आर्य संस्कृति का प्रचार प्रसार 2. राक्षसों के अत्याचारों से बन जनो और ऋषियों की रक्षा की।

''एक बार त्रेता युग मांही शम्भू गये कुंभज ऋषि पाही
साथ सती जग जननि भवानी, पूज ऋषि अखिलेश्वर जान्ही
राम कक्षा मुनिवर बरानी सुनि महेश परम सुख मानी
कहत सुनत रघुवर गुन गाटा कछु दिन रहे वहां गिरनाथा''

कुंभज ऋषि ने शंकर जी को राम कथा त्रेता युग में सुनाई ''जन कि शंकर जी स्वयं राम कक्षा के मर्मज्ञ तथा आदि आचार्य है। कुंभज ऋषि को उन्होंने ही दीक्षा दी थी। काशी नरेश की कन्या लोप मुद्रा से इनका विवाह हुआ। महर्षि अगस्त वेद कालीन ऋषि थे, ऋगवेद के मंत्र दृष्टा ऋषि माने गये है। अगस्त और वशिष्ठ मुनि माई भाई माने गये है सप्त ऋषि मंडल में अगस्त ताण स्थापित है। उसके उदय होते ही वर्षा ऋतु समाप्त हो जाती है।

''उदित अगस्त पथ जल शोषा''

अगस्त जी श्री विष्णु अवतार के प्रवक्ता आचार्य थे। दक्षिण में अगस्त जी श्री विष्ण अवतार के प्रवक्ता आचार्य थे दक्षिण में जहां अगस्त जी रहे, वह अगस्त पर्वत के नाम से विख्यात है। दक्षिण के ऋषियों ने अगस्त जी से प्रार्थना की कि जिस प्रकार उत्तर में गंगा बहती है जो भागीरथ की तपस्या का फल है, आप भी कृपा कर हमें पावन नदी दीजिये, प्रसन्न होकर अगस्त जी ने अगस्त पर्वत से स्वर्ण बैखरी नदी प्रवाहित कर दी जो दक्षिण में समुद्र में गिरती है। उसी नदी की बहिन धारा रूप में ''कृष्णा और कावेरी'' है जो दक्षिण की गंगा कहलाती है।

निष्कर्ष

रावण युद्ध में ''आदित्य ह्रदय'' नामक स्लोत 3 बार शुद्ध करते समय जपने को श्री रामाके कहा फल स्वरूप रावण मारा गया। श्री राम राज्याभिषे के समय अगस्त जी अयोध्या गये और रावण कुंभकरण, मेघनाथ, कुबेर की कथा श्री राम को सुनाई रावण को चन्द्रहास तलवार शंकर जी से कैसे प्राप्त हुई बताया, बालि आदि की उत्तपत्ति बतलाई, अयोध्या निरन्तर आते रहेगें ऐसा वचन श्री राम को दिया आध्यात्म रामायण में इसका विस्तृत वर्णन है।

राजा नहुष जब इन्द्र बने तो अगस्त ऋषि को पालकी ठोने में अज्ञानवश लगा लिया। नहुष के सर्प सर्प (जल्दी चलो, जल्दी चलो) आदेश देने के कारण इन्होंने श्राप दे दिया जिससे वर्षों तक वह सर्प के रूप में पड़ा रहा।

अगस्त जी दक्षिण के कुलपति थे, इन्होने अनेक हथियारों का निर्माण किया, विश्वामित्र ऋषि के समान वैज्ञानिक थे उन्होंने रावण को मारने हेतु वह धनुष दिया जिससे विष्णु जी ने राक्षसों को मारा

था। अगस्त जी ने ऋगवेद के कुछ मंत्रो की रचना की अगस्त रचित ''अगस्त गीता'' स्कन्धीय अगस्त संहिता, शिव संहिता, भास्कर संहिता, अमृत मय रत्न परीक्षा लिखी।

श्री राम, बाल्मीक ऋषि जिन्होंने रामायण की रचना की, अगस्त ऋषि ये सब ऐतिहासिक व्यक्ति है। ऋषियों के आश्रम ऊर्जा केन्द्र पहले थे अब भी हो सकता है यदि इस ओर ध्यान दिया जाये। इस तरह अगस्त जी श्री राम के दक्षिण यात्रा के पथ प्रदर्शक थे।

संदर्भ

1. बाल्मीक रामायण, अध्यात्म रामायण राचचरित मानस, रघुवंश कोहली के निबन्ध (उपन्यासकार) एवं अन्य ग्रन्थ।